प्रथम अध्याय

'राही मासूम रजा का व्यक्तित्व एवं कृतित्व'

डॉ.राही मासूम रजा : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

अ. व्यक्तित्व

जन्म :

हिंदी उर्दू के बहुचर्चित विद्वान-लेखक डॉ.राही मासूम रजा का जन्म 1 अगस्त, 1927, ई. को. पूर्वी उत्तर प्रदेश के गाजीपुर जिले में हुआ था ।

माता-पिता :

उनकी माँ का नाम नफिसा बेगम था । उनके पिता गाजीपुर जिला कचहरी में वकील थे ।

शिक्षा :

सुसंस्कृत-सुशिक्षित पारिवारिक माहौल में राहीजी का बचपन बीत गया था । उनकी प्रारम्भिक शिक्षा गाजीपुर में ही सम्पन्न हो गई थी । हाईस्कूल के बाद टी.बी. हो जाने के कारण उनकी पढाई रूक गयी थी । उर्दू की परीक्षा देकर उन्होने उपाधियाँ प्राप्त की थी । उन्होने अलीगढ मुस्लिम विश्वविद्यालय से सन् 1960 ई. में स्नातकोत्तर और सन् 1964 ई.में डॉक्टरेट की उपाधि प्राप्त की थी । उनके शोध-प्रबन्ध का विषय था, "तिलिस्मे होशरूबा के तहजीबी उनासिर"।

नौकरी-व्यवसाय

डॉक्टरेट के बाद डॉ.राहीजी अलीगढ मुस्लिम विश्वविद्यालय में प्राध्यापक के रूप कार्य करते रहें । कई दिनों तक उन्होंने बैंक में नौकरी की । भाग्य आजमाने बम्बई आए डॉ.राहीजी अंत तक हिंदी सीनेमा और दूरदर्शन के साथ जुडे रहें । उन्होने 300 से ज्यादा फिल्मों के लिए पटकथा और संवाद लेखन किया । दूरदर्शन धारावाहिक "महाभारत" के लोकप्रिय संवादों ने उन्हें दूर दूर तक फैले भारतीय दर्शकों तक पहुँचा दिया ।

सच्चे मित्र :

संदेशनशील और सहृदय डॉ.राहीजी अपने मित्रत्व को बनाये रखने के लिए कुछ भी करने को तैयार रहते थें । उन्होंने एक बार दोस्त के लिए अपना नाम बदलकर कहानियाँ भी लिखो थी ।

मित्रों के साथ अपनत्व का व्यवहार करनेवाले डॉ.राहीजी सच्चे मित्र थें ।

बहुभाषिक :

डॉ.राहीजी बहुभाषिक थें । हिंदी, उर्दू, संस्कृत, पर उनका अधिकार था । वे उर्दू को हिंदी की एक शैली मानते थे । कुछ समय तक उन्होंने "इस्मत चुगताई" के साथ मिलकर "उर्दू के लिए देवनागरी लिपि" का आन्दोलन भी चलाया था । हिंदी की बोलियों का अच्छा ज्ञान उन्हें था ।

बहुमुखी साहित्यकार

हिंदी–उर्दू भाषा के अधिकारी डॉ.राहीजी ने शायर, कवि, उपन्यासकार, जीवनीकार और पटकथा–संवाद लेखक के रूप में अमिट छाप छोडी है । उन्हें सफलता सम्मान और प्रतिष्ठा मिलि थी ।

सच्चा साहित्यिक

डॉ.राहीजी अपने स्वतंत्र अस्तित्व की स्थापना की कोशिश हमेशा करते रहें । एक प्रकाशक ने "गुनाह की राते" जैसी कहानियाँ लेखन के लिए उन्हें 200 रूपये ॲडव्हान्स दिया था । उन्होंने सौ–सव्वासौ पन्नों का लेखन भी किया था , परंतु उनकी आत्मा इस स्थिति को स्वीकारने के लिए तैयार नहीं थी । आत्मा की आवाज दबाकर पैसोंवालों के लिए काम करना उनके अन्दर के लेखकने अस्वीकार कर 200 रूपये वापस दिए ।

विवशता का शिकार

लौकिक अर्थ में सफल जीवन–यापन करनेवाले डॉ.राहीजी को विवशतावश अपने विचारों को दबाकर रखना पडा था । अलीगढ विश्वविद्यालयों में काम करते समय ही उन्होंने अनुभव किया था कि ईमानदारी से काम करना और सच बोलना भी घाटे का काम है । लेकिन इस स्थिति को स्वीकारने के सिवा उन्हें कोई चारा नहीं था । वर्तमान के साथ समझौते के लिए विवश डॉ.राहीजी ने अपनी भूमिका स्पष्ट करते हुए कहा है कि "आज के युग में अगर जीना है तो आत्मा को मारकर ही जीना पडता है ।"(1) तकदीर अजमाने बम्बई आए डॉ.राहीजी अपनी कहानियाँ लेकर फिल्म

निर्माताओं के पास जाते थे, तब उन्हें विचित्र स्थिति का सामना करना पडता था । उनकी कहानियाँ खरीदनेवाले "फिल्म–निर्माता" अपनी इच्छानुसार कहानियों को तोड–मरोडकर गलत ढंग से प्रस्तुत कर रह हैं यह देखकर भी धन प्राप्ति के लिए उन्हें विवशतावश चूप रहना पडता था । उन्होंने अनुभव किया था कि बंबई जैसे महानगर में सच्चे साहित्य की निर्मिति सहज संभव नहीं है । उन्हें मालूम था कि फिल्म के माध्यम से ही अपने विचार सामान्य पाठकों तक पहुँच सकते हैं, इसी कारण वे फिल्म के साथ जुडे रहें ।

प्रगतिशील विचारक

अलीगढ विश्वविद्यालय में उर्दू साहित्य पढाते समय वे कम्युनिस्ट पार्टी के साथ जुड गए । तब उन्हें गन्दी राजनीति, कट्टर धर्मान्धता और साम्प्रदायिकता का पता चला । फलतः उनके अंदर का प्रगतिशील लेखक जाग उठा और उसने साम्यवादी विचारों के प्रचार–प्रसार के लिए प्रचारवादी कविता और कहानी साहित्य लिखा । उनके प्रगतिवादी विचारों से नाराज लोगों ने उनके सम्बन्ध में अनेक अफवाहे फैलाकर उनका जीना मुश्किल कर दिया था ।

कर्मयोगी

अलीगढ विश्वविद्यालय के विषम परिवेश में रहनेवाले डॉ.राहीजी अपनी तकदीर पर कभी रोये नहीं । उन्हें अपने कर्म और लेखनी पर भरोसा था । वे अपने भाग्य को बदलने के हेतु बंबई चले आए । यहाँ के अलग वातावरण में "एडजेस्ट" करना उन्हें थोडा कष्टसाध्य लगा था । बंबई के प्रारम्भिक दिनों में कमलेश्वर और डॉ.धर्मवीर भारती ने उनकी सहायता की था ।

लेखनी के द्वारा सामाजिक क्रान्ति लाने की इच्छा रखनेवाले डॉ.राहीजी अपने क्रान्तिकारी विचारों को हिंदी फिल्मों के द्वारा अभिव्यक्त करते रहें । 300 से ज्यादा फिल्में और दूरदर्शन के छोटे पर्दे के साथ आखरी साँस तक जुडे रहे डॉ.राहीजी की जीवन यात्रा कर्मयोगी साधक की जीवन यात्रा है ।

पूरे भारतीय

धार्मिक –साम्प्रदायिक कट्टरता से कोसों दूर रहनेवाले डॉ.राहीजी सच्चे भारतीय थे ।

उन्होनें हमेशा ईमानदारी से रहने की कोशिश की थी । देश विभाजन की प्रक्रिया को अपनी आँखों से देखनेवाले डॉ.राहीजीने कभीभी आक्रमक या कट्टर बनकर लेखन नहीं किया है ।

जन्म से मुसलमान होते हुए भी उन्होंने कभीभी हिंदू धर्म और विचारों को बुरी दृष्टि से नहीं देखा । उन्होंने अपने साहित्य में अपनी जात को कभीभी आने नहीं दिया था । परिणामस्वरूप उनके देशविभाजन और साम्प्रदायिक दंगों के चित्रण में यथार्थता का समावेश हुआ है । वे हमेशा भारतीय बनकर लिखते रहें ।

गंगापुत्र

गंगा किनारे गाजीपुर में जन्म डॉ.राहीजी को "गंगा प्रेम" चर्चा का विषय है । उनकी प्रत्येक कृति जन्मभूमि के साथ जुडी हुई है । गंगा नदी, गाजीपुर का परिवेश, पहाड, झरने, पेड–पौधे उनके प्रिय विषय रहे हैं । मनुष्य के प्रति प्रेम रखनेवाले डॉ.राहीजी के मतानुसार इंसान–इंसान के बीच आत्मिक लगाव होता है जो प्रकृति ने मनुष्य को दिया है । उनकी धारणा रही है कि दुनिया का प्रत्येक दृश्य अपनी जमीन से जन्मा है । जमीन की निर्माण शक्ति को सर्वोपरि माननेवाले डॉ.राहीजी ने अपनी अन्तिम इच्छा व्यक्त करते हुए कहा है – "मुझे ले जाकर गाजीपुर में गंगा की गोद में सुला देना । वो मेरी माँ है, मेरे बदन का जहर पी लेगी । मगर शायद वतन से दूर मौत आए, तो मेरी यह वसीहत है । अगर उस शहर में छोटी सी इक नद्दी भी बहती हो तो मुझ को उसकी गोदी में सुला कर उससे यह कह दो कि , यह गंगा का बेटा आज से तेरे हवालें है । वो नद्दी भी मेरी माँ, मेरी गंगा की तरह मेरे बदन का जहर पी लेगी ।"(2)

मृत्यु

गंगापुत्र डॉ.राही मासूम रजा की मृत्यु कैंसर की बीमारी से 15 मार्च, 1992 को बंबई में हो गयी ।

आ. कृतित्व

सन् 1946 ई. से सन् 1992 ई. तक साहित्य जगत् से जुडे डॉ.राही मासूम रजा एक

शायर के रूप में उभरे थे । उनका रचना संसार विविधता से भरा हुआ है । उन्होने उपन्यास काव्य, जीवनी, फिल्मी पटकथा–संवाद लेखन से अपनी अलग पहचान बनायी है । उनका सम्पूर्ण साहित्य अनुभवों और मिट्टी की महक से पाठक को आकर्षित करता रहा है । अपने अनुभव विश्व को कलात्मक ढंग से शब्दवाणी देनेवाले डॉ.राहीजी का साहित्य यों हैं –

क. उर्दू साहित्य –

1. काव्य – नयासाल, मौजे ए गुल, मौजे ए सबा, अजनबी शहर, अजनबी रातें, रक्स ए.मै

2. उपन्यास – मुहब्बत के सिवा

ख. हिंदी उर्दू –

1. महाकाव्य – 1857

2. उपन्यास – आधा गाँव

ग. हिंदी

1. काव्य – मैं एक फेरीवाला

2. जीवनी – छोटे आदमी की बडी कहानी

3. उपन्यास – आधा गाँव, हिम्मत जौनपुरी, टोपी शुक्ला, ओस की बूँद, दिल एक सादा कागज, सीन–73, कटरा बी आर्जू, असंतोष के दिन

उपन्यासकार डॉ.राही मासूम रजा

हिंदी–उर्दू के सफल उपन्यासकार डॉ.राहीजी का प्रथम उपन्यास "मुहब्बत के सिवा" (1950) उर्दू में लिखा हुआ है । उन्होंने इलाहाबाद से प्रकाशित "रूमानी दुनिया" सीरीज में छद्म नाम से 50 से भी अधिक उपन्यास लिखे थें । इनमें से कुछ को वे दोबारा लिखकर अपने नाम से छपवाना चाहते थे । उनके प्रसिध्द उपन्यास यों हैं –

आधा गाँव (1988) – डॉ.राही का बहुचर्चित उपन्यास "आधा गाँव" मूलतः उर्दू में लिखा गया था और हिंदी में पहली बार अक्षर प्रकाशन से प्रकाशित हुआ था । "आधा गाँव" वस्तुतः रूमानी दुनिया के लिए लिखा गया था, जो रूमानी दुनियावालों को पसंद नहीं आया ।

"आधा गाँव" गंगौली के शीआ मुसलमानों की सम्पूर्ण जीवन कथा चित्रित करनेवाला आँचलिक उपन्यास है । लेखक गंगौली का सदस्य होने के कारण उन्होंने आत्मीयता के साथ अपने गाँव को अभिव्यक्त किया है ।

हिम्मत जौनपुरी (1969) – आधा गाँव की तुलना में यह छोटा उपन्यास है । लेखक ने अपने बचपन के साथी "हिम्मत जौनपुरी" की कहानी इनमें कलात्मक ढंग से प्रस्तुत की है ।

टोपी शुक्ला (1969) – यह राजनीतिक समस्यापर आधारित चरित्रप्रधान उपन्यास है । इस्में देश विभाजन से उत्पन्न समस्या और मानसिकता का वर्णन किया है । साम्प्रदायिकता के कारण गाँव क्या से क्या बन गये हैं ? इस वास्तविकता को लेख्क ने अंकित किया है ।

ओस की बूँद (1970) – इसमें हिंदू–मुस्लिम साम्प्रदायिक झगडों को एक मुसलमान परिवार की कथा द्वारा प्रस्तुत किया गया है । डॉ.राहीजी ने साम्प्रदायिकता–कहरता के दुष्प्रभाव को दिखाया है ।

दिल एक सादा कागज (1973)– फिल्मी जीवन से जुडे प्रस्तुत उपन्यास में डॉ.राहीजीने फिल्मी कहानीकारों के जीवन की गतिविधियों, आशा–निराशाओं और सफलता असफलताओं का यथार्थ चित्रण किया है ।

सीन–75 (1977)– प्रस्तुत उपन्यास का विषय भी फिल्मी संसार से लिया गया है । यह एक सामाजिक उपन्यास है । इसमें बम्बई महानगर के बहुरंगी जीवन को विविध कोणों से देखने का प्रयत्न किया है । फिल्मी–जीवन चित्रण में लेख्क ने विशेष रूचि दिखायी है ।

कटारबी आर्जू 1978 में लिखा हुआ उपन्यास है । डॉ.राही का अंतिम उपन्यास है – असंतोष के दिन... ।

डॉ.राहीजी के उपन्यासों की विशेषता है – वास्तवता, रोचकता, विश्वसनीयता, अनुभव की

गहराई, विचारात्मकता, समस्या का चित्रण और प्रगतिवादी दृष्टि से समाधान, समकालीन जीवन की यथार्थता, व्यापकता, विषयवस्तु का विस्तृत चित्रण लोकभाषा का प्रयोग, लोक जीवन का अंकन, मिट्टी की महक, चेतना जागृति का प्रयास आदि ।

स द र्भ

अ.क्र.	उपन्यासकार	उपन्यास का नाम	पृ.क्र.
1.	डॉ.रामदरश मिश्र	हिंदी उपन्यास सौ वर्ष	411
2.	सम्पादक–गिरधर राठी	समकालीन भारतीय साहित्य (त्रैमासिक जनवरी–मार्च 1992)	189